

श्री वासुपूज्य पूजन



— ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' —





भगवान वासुपूज्य

स्थापना

छंद-सवैया तेईसा



बालयती वसुपूज्य तनय, प्रभु वासव सेवित त्रिभुवन नामी ।
बारहवें तीर्थकर हो, संयुक्त सुगुण छियालिस अभिरामी ॥
मुक्तिमार्ग मिला भविजन को, दिव्यध्वनि द्वारा हे स्वामी ।
भाव भये शुभ पूजन के, तिष्ठो उर में हे अन्तर्यामी ॥



भगवान् वासुपूज्य

स्थापना (छंद-दोहा)

हर्षित हो पूजँ चरण, चिन्तूँ गुण अभिराम ।
आराधूँ परमात्म पद, पाऊँ शाश्वत धाम ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वानम्)

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्)
पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।





भगवान वासुपूज्य

अष्टक

छंद-गीतिका

निज आत्मतीर्थ सु पाइया, समतामयी जल जहाँ भरा ।
मिथ्यात्व मल छूट्यो प्रभो! स्नान करि निर्मल भया ॥
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, पूजा करूँ अति चाव सों ।
आनन्दमय ब्रह्मचर्य वर्ते नाथ! सहज स्वभाव सों ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।





भगवान् वासुपूज्य

भव ताप नाशा देव! शीतलता स्वयं में ही मिली।
आराधना की युक्ति पाई, सहज निज परिणति खिली।।
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, पूजा करूँ अति चाव सों।
आनन्दमय ब्रह्मचर्य वर्ते नाथ! सहज स्वभाव सों।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।





भगवान् वासुपूज्य

अक्षय अबाधित ज्ञानमय, चैतन्य प्रभु पाया अहो ।
तुष बिना तन्दुल सम अमल, अक्षय स्वपद आधार हो ॥
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, पूजा करूँ अति चाव सों ।
आनन्दमय ब्रह्मचर्य वर्ते नाथ! सहज स्वभाव सों ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।





भगवान वासुपूज्य

प्रभु! तुम गुणों की पुष्पमाला, कंठ में धारण करूँ ।
निष्काम ब्रह्मस्वरूप ध्याऊँ, अब्रह्म परिणति परिहरूँ ॥
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, पूजा करूँ अति चाव सों ।
आनन्दमय ब्रह्मचर्य वर्ते नाथ! सहज स्वभाव सों ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।





भगवान वासुपूज्य

शुद्धात्म अनुभव के समान, न रस दिखे तिहुँ लोक में ।
ताके आस्वादी क्षुधादिक, नाशे बसे शिवलोक में ॥
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, पूजा करूँ अति चाव सों ।
आनन्दमय ब्रह्मचर्य वर्ते नाथ! सहज स्वभाव सों ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।





भगवान वासुपूज्य

चैतन्य ज्योति सु जगमगे, मोहान्धकार नहीं रहे ।
फिर बाह्य दीपक भी सहज निस्सार मुझको भी लगे ॥
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, पूजा करूँ अति चाव सों ।
आनन्दमय ब्रह्मचर्य वर्ते नाथ! सहज स्वभाव सों ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।





भगवान वासुपूज्य

आनन्दमय आराधना से, ध्यान की अगनी जले ।
निज सुगुण विलसें सर्व वैभाविक करम ईंधन जले ॥
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, पूजा करूँ अति चाव सों ।
आनन्दमय ब्रह्मचर्य वर्ते नाथ! सहज स्वभाव सों ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।





भगवान वासुपूज्य

तिहुँ लोक पूजित सिद्धपद, आराधना का फल महा ।
यह जानकर लौकिक फलों का भाव नहीं किंचित् रहा ॥
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, पूजा करूँ अति चाव सों ।
आनन्दमय ब्रह्मचर्य वर्ते नाथ! सहज स्वभाव सों ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं
निर्वपामीति स्वाहा।





भगवान वासुपूज्य

निर्भेद निरघ सु अर्घ्य लेकर, ज्ञानमय आनन्दमय ।
मैं अर्चना करता प्रभु, निर्द्वन्द्व पद पाऊँ अभय ॥
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, पूजा करूँ अति चाव सों ।
आनन्दमय ब्रह्मचर्य वर्ते नाथ! सहज स्वभाव सों ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



पंचकल्याणक संबंधी अर्घ्य

छंद-द्रुतविलम्बित

होय च्युत महाशुक्र विमान से, आये विजया माता गर्भ में।
षाढ़ कृष्णा षष्टमी थी सही, धनि हुई चम्पापुर की मही ॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णषष्ट्यां गर्भकल्याणकमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

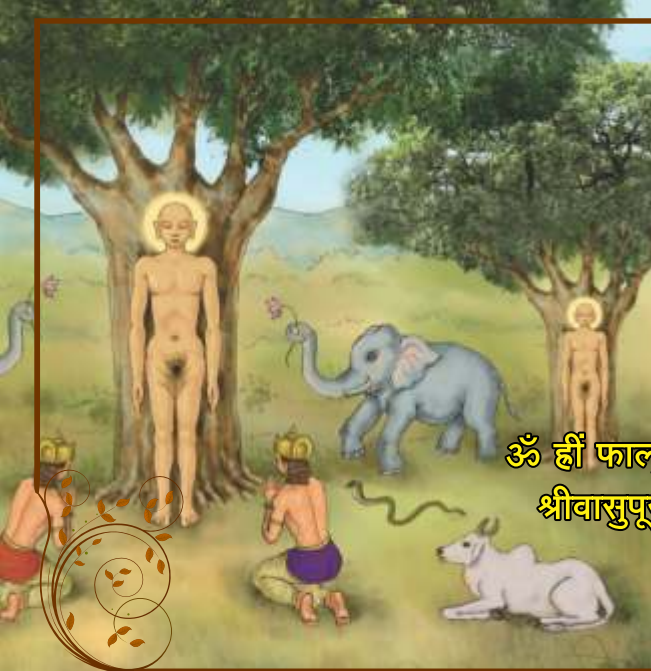




चतुर्दशि फागुन की श्याम है,
जन्म अन्तिम प्रभु अभिराम है।
किया था अभिषेक सुमेरु पर,
पुण्यशाली इन्द्रों ने आनन्द कर ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकमण्डिताय
श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

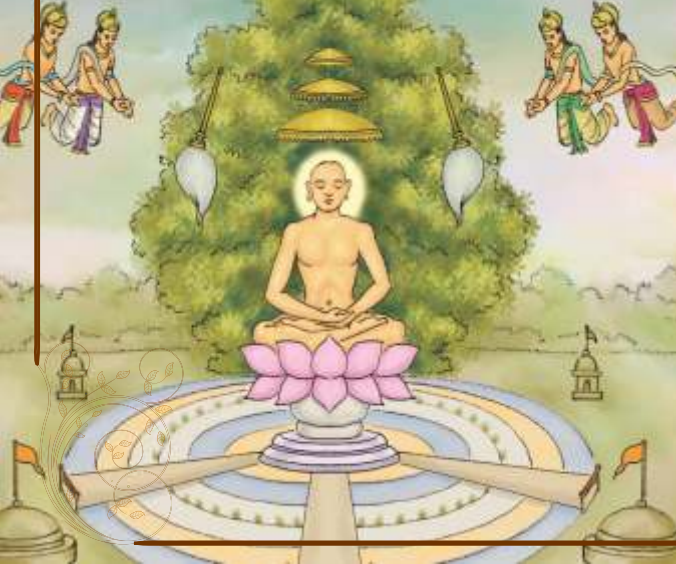




ब्याह अवसर पर प्रभु वैराग्य धरि,
भव शरीर कुभोग असार लखि ।
चतुर्दशि फागुन कलि शुभ घड़ी,
अहो मुनिपद की सहज दीक्षा धरी ॥

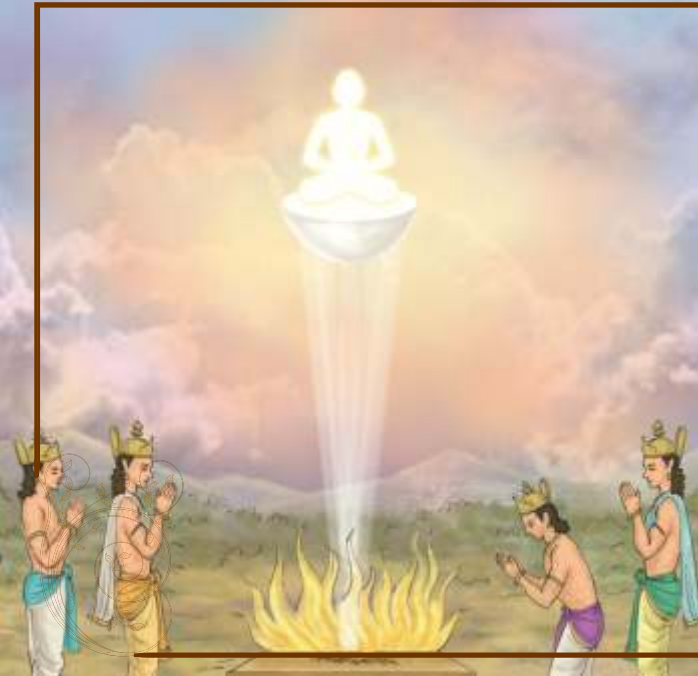
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपःकल्याणकमण्डिताय
श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।





शुक्ल ध्यान महान लगाइया,
ज्ञान केवल जिनवर पाइया।
दिव्यध्वनि भई मंगलकार है,
दूज भाद्रव कृष्ण की सुखकार है ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णद्वितीयायां
ज्ञानकल्याणकमण्डिताय
श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



चतुर्दशी सित भादों की सही,
लही प्रभुवर ने अहो अष्टम् मही ।
तीर्थ चम्पापुर महासुखदाय है,
अर्घ ले जजिहों सहज शिवदाय है ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां
मोक्षकल्याणकमण्डिताय
श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।





भगवान वासुपूज्य

जयमाला

छंद-दोहा

इन्द्रादिक पूजै चरण, महाभक्ति उर धार ।
गावें जयमाला प्रभो! आत्मनिधि दातार ॥

छंद-चौपाई

जय-जय वासुपूज्य भगवान, गुण अनन्त मंगलमय जान ।
भरि यौवन में सहज विराग, भोगों प्रति उपज्या नहिं राग ॥





भगवान् वासुपूज्य

निज में प्रमुदित बाह्य उदास, आत्मसाधना का उल्लास ।
जगत विभव किंचित् न सुहाय, तत्त्व विचार करें सुखदाय ॥
शुद्धातम ही जग में सार, अविनाशी सुख का आधार ।
इन्द्रिय सुख तो दुख के मूल, फल में उपजें भव-भव शूल ॥





संसारी निज ज्ञान विहीन, इन्द्रिय मद मेटन बलहीन ।
विषय चाह उपजावे दाह, भोगन में भूले शिवराह ॥
आत्मज्ञान बिन शरण न कोय, व्यर्थ मोह में क्लेशित होय ।
अब विलम्ब करना नहीं जोग, धरूँ शीघ्र शिवदाता योग ॥





सब विधि अवसर मिलो महान, जीतूँ कर्म लहूँ निर्वान ।
दृढ़ विराग उपज्या सुखदाय, तत्क्षण लौकान्तिक सुर आय ॥
अनुमोदन कर शीश नवाय, धन्य विचार कियो जिनराय ।
दीक्षा धरो प्रभो! अविकार, भायें भावना हम हू सार ॥





इन्द्रादिक आये हर्षाय, प्रभु को तपकल्याण मनाय ।
उत्सव सों प्रभु वन में गये, वस्त्राभूषण सब तजि दये ॥
पंच मुष्टि कचलोंच कराय, निर्ग्रन्थ रूप धर्यो सुखदाय ।
आत्मध्यान की धुनी लगाय, एक वर्ष छद्मस्थ रहाय ॥





चढे क्षपक श्रेणी सुखकार, प्रकट्यो अर्हत् पद अविकार ।
भविजन को शिवराह दिखाय, सिद्धालय में तिष्ठे जाय ॥
ज्ञान माहिं हे देव! निहार, करें अर्चना मंगलकार ।
प्रभु चरणों में शीश नवाय, अद्भुत परमानन्द विलसाय ॥





भगवान् वासुपूज्य

छंद-घत्ता

प्रभु अमल अनूपं, शुद्ध चिद्रूपं, सहजानन्दमय राजत हो ।
निष्काम जिनेश्वर, जजूँ महेश्वर, शिव मार्ग विस्तारत हो ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये
जयमालापूरुर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।





छंद-दोहा

बाल ब्रह्मचारी प्रभो! वासुपूज्य जिनराज ।
करि सम्यक् आराधना, पाऊँ निजपद राज ॥

पुष्पांजलिं क्षिपामि / क्षिपेत्।

